वैदिक साहित्य और विज्ञान का सम्बन्ध

DaRAxok kmar Ael. Pa3el
AqD Aand Aa3Rs AND komsR kaRej ,veD roD, sut

१. पास्ताविक

विश्व साहित्यमें प्राचीनताकी दृष्टिसे देखिए तो प्रमुख स्थान वैदिक साहित्यका है । ऋग्वेद प्राचीन ग्रंथ है । वेदकी वाणीको ईश्वरीय वाणीसे जाने जाते है । मनुष्य जीवनमें शास्त्रोक्त तरीके से देखा जाय तो चिंतन मनन और निदिध्यासन के मूल आधार वेद ही है । वैदिक वाङ्मय भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक क्षेत्रे आर्योकी रीतभात को अच्छी तरहसे समजानेके लिये मददरुप होती हे । वेदका महत्व सदीओंसे माना गया है । इस वेदका साहित्य विभागकी ओर विचार किया जाय तो उनको तीन विभागमें बाँटा जाय जैसे कि

१ संहिता विभाग ।

२ ब्राह्मण विभाग ।

३ आरण्यक और उपनिषद

इस वैदिक साहित्यको पतंजलिने महाभाष्यमें ऋग्वेदकी २१ शाखाएँ बताई है । जिसमें पांच मुख्य है ।

१ शाकल शाखा २ बाष्कल शाखा ३ आश्वलायन शाखा ४ सांखायन शाखा ५ मांडूक्यायन शाखा परंतु इन शाखाओं में से आज केवल शाकल शाखा हि प्राप्त हुई है । वशिष्ट ऋषिने इस ऋग्वेद साहित्यमें दुष्ट आसुरी तत्वो के आधार पर आधुनिक विज्ञानका भी सम्बन्ध बतानेका प्रयास किया है ।

२. वैदिक साहित्यकी कृतियाँ

वेद शब्द से १ ऋग्वेद । २ यजुर्वेद । ३ सामवेद । और ४ अथर्ववेद ये चारो वेदो का ज्ञान होता है । तथा वैदिक साहित्य को इन चार वेदो के अलावा -[क] इस वेदों को समझने के लिए उपयोगी साहित्य है वेदांगो जैसेकी १ शिक्षा। २ कल्प । ३ ज्योतिष । ४ छन्द । ५ व्याकरण और ६ निरुक्त [ख] प्रातिशाख्यो [ग] बृहदेवता और [घ] अनुक्रमणि ग्रंथोकी गणना होती है ।

३. ऋग्वेद संबंधित साहित्य

१ ऋग्वेदकी शाखाओंमे से - शाकल संहिता ।

२ ब्राह्मण - कौषीतकी और ऐतरेय ।

३ आरण्यक - कोषीतकी और ऐतरेय ।

४ उपनिषद् कोषीतकी और एतरेय ।

५ कल्प - १ श्रोतसूत्र - शांखायन और आश्वलायन ।

२ गृहसूत्र - शांखायन आश्वलायन और शाम्बल्य ।

३ धर्मसूत्र वशिष्ठ ।

६ प्रातिशाख्य - शौनक कृत ऋकप्रातिशाख्य ।

७ अनुक्रमणि - आर्षानुक्रमणि छन्दानुक्रमणि देवतानुक्रमणि अनुवाकानुक्रमणि सूक्तानुक्रमणि ऋग्वियान पादविधान बृहदेवता ऋकसर्वानुक्रमणि और माधवीयानुक्रमणि ।

५. यजुर्वेद सम्बन्धित साहित्य

१ शुक्ल यजुर्वेद २ कृष्ण यजुर्वेद ।

अ- शुक्लअ यजुर्वेदकी शाखाऐ - वाजसनेयि या माध्यन्दिनि और काण्व ।

ब -कृष्ण यजुर्वेदकी शाखाऐ - तैतिरीय मैत्रायणी कठ ।

सामवेद सम्बन्धित साहित्य :

कौथुमी जैमिनीय और राणायणीय ।

वैदिक साहित्यमें वेद पुरुष की उत्तम कल्पना की गई है जैसे कि -

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पयोऽथ पठयते ।
ज्योतिषमयनं चक्षुनिसुक्तमं श्रोतुमुच्यते ॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥

इसमें वेद पुरुषके दो पाँव को छंद बताया गया है । दो हाथको कल्प ज्योतिषको चक्षु और निरुक्तको कान शिक्षाको नाक व्याकरणको मुख कहा गया है ।

६ दार्शनिक विचार

वेदोमें दार्शनिक विचारके अनेक सूक्त पायें गये है। और इसमे से ही सूचन लेकर उनके आधारके जरिए पीछे से विविध उपनिषदो में ये विचार आगे बढे है। जगतके मूलद्रव्य सत् थे उन सत् तत्वोंको विज्ञान के साथ क्या संबंध है इस बातको इन दार्शनिक विचारको शास्त्रोक्त सिद्धांतोको वेदादि मंत्रोमें आधुनिक विचारको मिलाकर विज्ञानकी शोध और टेकनोलोजी का विचार बताया है । जिनमें मनुष्यको कैसे जीवन जीना चाहिए उनका तरीका बताया गया है । वे हि विज्ञान कहा जाता हे। वेदों में बताई गई औषधियों के जरिए कहा गया है कि वे मनुष्यको अपने आप कर्मसे मुक्ति दिलाता है । एवं यम के संबंध में से मुक्त करवाते है। इस लिये ऋग्वेद मंडल १०-१७ में कहा है -

मुअचन्तु मा शपथ्य। यथो बरुण्यादुत ।
अथो यमस्यषड्वीशा त सर्वस्मादवकिल्विषात् ॥

७.विज्ञान का संबंध

मनुष्यका जन-जीवन संबंधित कर्म सिद्धान्त और व्यवहारको विज्ञान के साथ जोडनेका सहज प्रयास वेदोने किया है जिसमें कोई शंका नहि है। संवाद सूक्त के जरिए मानुषी और अमानुषी तत्त्वों का निखार दिया गया है। जिसमे वैदिक -अवैदिक सत्य-असत्य तत्त्वों का उपयोग के जरिए इनमें शोध और सिद्धान्तका अनुभव अवश्य मिलता है। इन सबको हि विज्ञान कहा जाता है। इस प्राचीनतम ग्रन्थोमें इश्वरीय ज्ञान भरा है। इस वेदो में सबसे बडा भाग या हिस्सा उपासना और कर्मकांड के संबंन्धित है। उसमें यथा स्थान पर आत्मा-परमात्मा प्रकृति समाज-संगठन धर्म-अधर्म ज्ञान -विज्ञान एवं जीवनके मूलभूत सिद्धान्त तथा जीवन उपयोगी शिक्षण तथा उपदेशका प्रस्तुतिकरण किया गया है। वाचक वर्गको अनुलक्ष्यमें रखकर आम लोगो तक पहुंचानेका ये प्रयास रहा है।

८.सत्य का प्रयोग

वेद में आत्मा-जीव तत्त्वका बहुत विश्लेषण आचार्योंने किया। तरह तरह के उदाहरणों पाये गये लेकिन वेदकी ये मान्यता और आधुनिक वैज्ञानिक युगमें भी वो सत्यकी शोच बदला नही गई इसका मतलब ये हुआ की वे पहेलेसे हि साबित हो गया था लेकिन मनुष्य स्वभाव ज्ञान उनको गलत विचार देती है। वेदोने हि सत्यका स्वरुप विज्ञानकी तरह बताया। ह्लअहम ब्रह्मास्मि।ह्ल ह्लअयम् आत्मा ब्रह्म।ह्ल इत्यादि सूत्रोके जरिए वेदोका विचार विज्ञानका सिद्धान्तके साथ मिला हुआ दिखाई देता है।

९.कर्मकाण्ड और विज्ञान

कर्मकाण्ड प्रधान इस वेदोमें जहां यज्ञादि विधिका विधान हुआ इसमें ज्ञान-विज्ञान आत्मा -परमात्मा एवं समाज उपयोगी भ़गवान श्री कृष्णने भ़गवदगीतामें अपने कर्मकी परिहार्यता एवं अपनी विभूतियोंका उत्तम विवरण देते हुए कहा है कि - वेदोमें हुं सामवेद हुं अपना मतोको प्रदर्शित करते हुए अपना शरीरको वेदोकी भाँति बताई और शिक्षण एवं मूलभूत जगतके सिद्धान्तको प्रदर्शित करके उनकी भ़ली भाँति बताई गई और विज्ञानके साथ कैसे जुडे है उसका प्रमाण गीताकारने बताया है।

१०.औषध विज्ञान

आर्युर्वेदमें औषधियोंका महत्तम उपाय बताये गये है। वे सभी विचार वेदमें हि पडा है। हमारे ऋषिमुनिओं की ये देन है। मनुष्यका शरीरमें कोई भी दर्द का उपाय बताये गये है। एवं सुख दुःख व्यवहार उपयोगी विचारोकी भी दवाईयाँ बताई गई है। इस लिऐ औषध ये मात्र विज्ञानका ही उत्तम उपाय नहीं लेकिन प्राणीमात्रके जीवन निर्वाहका अनमोल साधन बन चूका है।